ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय।

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

कक्षा -नवम् विषय- हिंदी

दिनांक -23/05/2020 क्षितिज -काव्य- खंड

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया 卐

शुभ प्रभात, आपका दिन मंगलमय हो! आप हमेशा हँसते-मुस्कुराते रहें! बच्चों, मैं पाठ अध्ययन पर जाने से पहले कुछ बातें आपसे बांटना चाहती हूं इस गद्य काव्य के द्वारा ।

तुकनेव का एक गद्य काव्य अत्यंत मार्मिक है ।उसमें उन्होंने अपने भावों को कुछ इस तरह से व्यक्त किया है –"मैं जा रहा था सुनसान सड़क पर। देखा एक बुभुक्षित(भूखा) भिखारी को। बहुत ही दुर्बल था वह ।याचना थी उसकी आंखों में। देना
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

चाहा, पर मेरी जेब में कुछ भी नहीं था एक पैसा भी नहीं। क्या करूं? अंत में मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। उठाया और सिर पर हाथ फिराया। आशा दिलाई। मैं न सही कोई दूसरा मदद करेगा। आप हताश न हों ।भिक्षुक के होंठ हिले व वह बोला- 'मेरे ठंढे हाथों को अपने गरम हाथों से पकड़कर जो गर्मी दी, उससे भी बहुत राहत मिली। आपका एहसान भूलने वाला नहीं हूँ' ।मैं धीमे पैरों आगे बढ़ा। सोचता था उस भिक्षुक ने मुझे नया प्रकाश दिया। नया द्वार खोला और नई राह दिखाई।"

बच्चों यह प्रसंग मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसे अवसरों के लिए हर व्यक्ति को प्रतिपल सतर्क रहना चाहिए ।

अब आते हैं हम लोग अध्ययन सामग्री की ओर हमने रसखान के सवैया को पढ़ा । उनके प्रत्येक पदों के अर्थ को पढ़ा। आज मैं रसखान के सवैया का सारांश रूप यहां प्रस्तुत कर रही हूँ ।

<u>रसखान के सवैया का सारांश</u>

प्रदत्त प्रथम समय में कवि कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति का उदाहरण पेश करते है।उनका कहना है, कि ईश्वर उन्हें चाहे

मनुष्य बनाए या पशु-पक्षी बनाए या पत्थर,उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता है,वे सिर्फ कृष्ण का साथ चाहते हैं ।इस तरह हम रसखान के काव्य में कृष्ण के प्रति अपार प्रेम कथा भक्ति भाव को बखूबी देख सकते हैं। अपने दूसरे सवैये में रसखान ने कृष्ण के प्रेम का वर्णन किया है, वे ब्रज के खातिर संसार के समस्त सुखों का त्याग कर सकते हैं। गोपियों के कृष्ण के प्रति अतुलनीय प्रेम को तीसरे सवैये में दर्शाया गया है,उन्हें कृष्ण के हर वस्तु से प्रेम है।वे स्वयं कृष्ण का रूप धारण कर लेना चाहती हैं। अपने अंतिम सवैये में रसखान ने गोपियों की विवशता का वर्णन किया है कि किस प्रकार गोपियाँ चाह कर भी कृष्ण को प्रेम किए बिना नहीं रह सकतीं ।

धन्यवाद

“प्रतिकूलता में भी अनुकूलता को बनाए रखें एवं हमेशा मुस्कुराते रहें।“

कुमारी पिंकी “कुसुम”